


सलोकु ॥
सरगुन निरगुन निरंकार
सुंन समाधी आपि ॥
आपन कीआ नानका
आपे ही फिरि जापि ॥21॥





असटपदी ॥

जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥

पाप पुंन तब कह ते होता ॥

जब धारी आपन सुंन समाधि ॥

तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥

जब इस का बरनु चिहनु न जापत ॥


तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥

जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥

तब मोह कहा किसु होवत भरम ॥

आपन खेलु आपि वरतीजा ॥


नानक करनैहारु न दूजा ॥१॥







जब होवत प्रभ केवल धनी ॥
तब बंध मुक्ति कहु किस कउ गनी ॥
जब एकहि हरि अगम अपार ॥
तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥
जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥
तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥
जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥
तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥
आपन चलित आपि करनैहार ॥
नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥





अबिनासी सुख आपन आसन ॥
तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥
जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥
तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥
जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥
तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥
जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे ॥
तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥
आपन आप आप ही अचरजा ॥
नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥





जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥

तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥

जह निरंजन निरंकार निरबान ॥

तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥

जह सरूप केवल जगदीस ॥


तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥

जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥

तह किसहि भूख कवनु त्रिपतावै ॥

करन करावन करनैहारु ॥

नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥





जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥

तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥

जह सरब कला आपहि परबीन ॥

तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥

जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥


तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥


जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥

तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥

बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥

नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥





जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥

ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥

आपस कउ आपहि आदेसु ॥

तिहु गुण का नाही परवेसु ॥

जह एकहि एक एक भगवंता ॥


तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥

जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥

तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥

बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥

नानक आपस कउ आपहि पहुँचा ॥६॥





जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥

तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥

पापु पुंनु तह भई कहावत ॥

कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥

आल जाल माइआ जंजाल ॥

हउमै मोह भरम भै भार ॥


दूख सूख मान अपमान ॥

अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥

आपन खेलु आपि करि देखै ॥

खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥७॥





जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥
जह पसरै पासारु संत परतापि ॥
दुहू पाख का आपहि धनी ॥
उन की सोभा उनहू बनी ॥
आपहि कउतक करै अनद चोज ॥
आपहि रस भोगन निरजोग ॥
जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥
जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥
बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै

॥८॥२१॥

